



तृतीय छाताधारी (विशेष बल)
3 PARA (SPECIAL FORCES)



3 PARA (Special Forces)

3rd Battalion, The Parachute Regiment (Special Forces) was raised on 8th March, 1813 at Bolarum by Sir Henry Russell, The British Resident of Hyderabad. It was initially christened as 1st Battalion, The Russell's Brigade and after several changes in its name and organization, it was named as 3 Para (Special Forces) in 2004.

3 Para has played an important role in various operations in India and abroad since its inception. It took active part in operations during World War I and in Middle East and Burma during World War II. The battalion also played an important role in Jammu and Kashmir operations in 1947. On 7th November, 1947, it took part in the famous Battle of Shelatang and was awarded the Battle honour 'Shelatang'. It was also responsible for the liberation of Poonch and awarded Battle honour 'Poonch'. The unit was also awarded the Theatre Honour Jammu & Kashmir 1947-48.

This unit was the first battalion of the Indian Army to serve under the United Nations. From November, 1956 to November, 1957 it formed the Indian contingent of the United Nations Emergency Force (UNEF) in Egypt and Gaza Strip. The unit was deployed in the Western Sector during 1965 and 1971 operations and took part in OP CACTUS in Maldives in November, 1988. After its stint in overseas missions it was again deployed in Jammu and Kashmir in OP RAKSHAK.

From June, 1995 to October, 1998 the unit showed exemplary courage and was awarded with the Chief of the Army Staff Unit Citation. After completing its peace tenure in May, 2001, the battalion was deployed in OP MEGHDOOT for which it received the

Chief of the Army Staff Unit Citation for the second time in January, 2003.

The unit was ordered to be converted to Special Forces Battalion in November, 2003. The conversion process involved training, reorganization and operational preparation. On completion of the conversion training, the unit was validated for one and half year under Headquarters Northern Command. The unit was awarded Chief of the Army Staff Unit Citation for the third time on Army Day, 2007 for its exemplary performance in OP RAKSHAK.

The 3 Para is the first battalion of Indian Army to have served the UN Missions twice, the second time being in Lebanon in 2008 where as part of the Peace Keeping Force it was awarded the United Nations Force Commander Citation for excellent performance in a multinational environment. After return from the United Nations Mission, the unit is orbatted to South Western Command, with one Assault Team under Counter Insurgency Force (Victor) in Northern Command for conduct of Counter Insurgency Operations.

3 Para has received many honours and awards both pre and post independence. Awards like Maha Vir Chakra, Kirti Chakra, Ati Vishist Sewa Medal, Ashok Chakra, etc have adorned the officers of the battalion.

Department of Posts is happy to release a Commemorative Postage Stamp on 3 Para (Special Forces).

Credits:-

Text : Based on the material furnished by the proponent.
Stamp/FDC/ : Alka Sharma
Cancellation

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India



तृतीय छाताधारी (विशेष बल)
3 PARA (SPECIAL FORCES)

विवरणिका BROCHURE

तृतीय छाताधारी (विशेष बल)

तीसरी बटालियन, पैराशूट रेजिमेंट (विशेष बल) की स्थापना हैदराबाद के ब्रिटिश रेजिडेंट, सर हेनरी रसेल द्वारा 8 मार्च, 1813 को बोलारम में की गई थी। प्रारंभ में इसका नाम प्रथम बटालियन, रसेल ब्रिगेड रखा गया था तथा इसके नाम और संगठन में कई परिवर्तन करने के पश्चात 2004 में इसका नाम तृतीय छाताधारी (विशेष बल) रखा गया।

तृतीय छाताधारी ने अपनी स्थापना के समय से भारत और विदेश में अनेक सैन्य लड़ाइयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मध्य पूर्व तथा बर्मा में सैन्य प्रचालनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। इस बटालियन ने 1947 में जम्मू-कश्मीर की लड़ाई में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 7 नवम्बर, 1947 में इसने शैलाटांग के प्रसिद्ध युद्ध में भाग लिया तथा इसे युद्ध सम्मान 'शैलाटांग' प्रदान किया गया। इसको पुंछ की आजादी का श्रेय भी प्राप्त है तथा इसे युद्ध सम्मान 'पुंछ' प्रदान किया गया। इस यूनिट को थिएटर सम्मान जम्मू-कश्मीर 1947-48 भी प्रदान किया गया।

यह यूनिट भारतीय सेना की प्रथम बटालियन थी जिसने संयुक्त राष्ट्र के अधीन सेवाएं प्रदान कीं। नवम्बर, 1956 से नवम्बर, 1957 तक यह मिस्र और गाजा पट्टी में भारतीय दल के रूप में संयुक्त राष्ट्र आपदा बल (यूनईएफ) का हिस्सा थी। 1965 और 1971 की लड़ाई के दौरान इस यूनिट को पश्चिमी सेक्टर में तैनात किया गया तथा नवम्बर, 1988 में इसने मालदीव में ऑपरेशन कैक्टस में भाग लिया। विदेशों में इसके मिशन की अवधि पूरी होने के पश्चात इसे पुनः जम्मू-कश्मीर में आपरेशन रक्षक में तैनात किया गया।

जून, 1995 से अक्तूबर, 1998 तक इस यूनिट ने अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया तथा इसे थल सेनाध्यक्ष यूनिट प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। मई, 2001 में अपने शांति के कार्यकाल को पूरा करने के पश्चात, इस बटालियन को ऑपरेशन मेघदूत में तैनात किया गया जिसके लिए इसे जनरी, 2003 में

दूसरी बार थल सेनाध्यक्ष यूनिट प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुआ।

नवम्बर, 2003 में इस यूनिट को विशेष बल बटालियन में तब्दील किए जाने के आदेश दिए गए। परिवर्तन की प्रक्रिया में प्रशिक्षण, पुनर्गठन और प्रचालनात्मक तैयारी शामिल थी। परिवर्तन प्रशिक्षण के पूरा होने पर मुख्यालय उत्तरी कमान के अंतर्गत इस यूनिट को डेढ़ वर्ष के लिए वैधीकृत किया गया। यूनिट को आपरेशन रक्षक में अपने अनुकरणीय कार्यों के लिए सेना दिवस, 2007 के अवसर पर तीसरी बार थल सेनाध्यक्ष यूनिट प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

तृतीय छाताधारी भारतीय सेना की प्रथम बटालियन है जिसने यूएन मिशन में दो बार सेवाएं प्रदान की हैं। दूसरी बार इसने वर्ष 2008 में लेबनान में कार्य किया जहां शांति सेना के भाग के रूप में इसे बहुराष्ट्रीय वातावरण में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सेना कमांडर प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। संयुक्त राष्ट्र मिशन से लौटने के पश्चात यूनिट को दक्षिण-पश्चिमी कमान में रखा गया है जिसकी एक एसॉल्ट टीम को उत्तरी कमान में काउंटर इंसर्जेंसी फोर्स (विक्टर) के अंतर्गत काउंटर इंसर्जेंसी अभियानों के लिए लगाया गया है।

तृतीय छाताधारी को स्वतंत्रता से पहले और बाद में अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। बटालियन के आफिसर महावीर चक्र, कीर्ति चक्र, अति विशिष्ट सेवा मेडल, अशोक चक्र आदि जैसे पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं।

डाक विभाग तृतीय छाताधारी (विशेष बल) पर स्मारक डाक टिकट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

पाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक-टिकट/
प्रथम दिवस आवरण/
विरूपण : अलका शर्मा



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख Date of Issue	:	2 मार्च, 2013 2 March, 2013
मूल्यवर्ग Denomination	:	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	:	4.2 लाख* 0.42 Million*
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	:	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

* 1.1 लाख प्रस्तावक हेतु
* 0.11 million for the Proponent